प्रातः क्लास 25-3-68 ओमशान्ति पिता श्री बाबा

ओमशान्ति। अपन को आत्मा समझ कर बैठो और बाप को याद करो। बाबा पूछते हैं जब भी कहां भाषण करते सभा में बैठते हो तो घड़ी2 यह पूछते हो? बाबा बच्चों के भाषण सुनने चाहते हैं। तो देखो किस प्रकार भाषण करते हैं। जब कोई समझने आते हैं वा भाषण करते हो तो पहले यह प्रश्न पूछते हो कि तुम अपन को आत्मा समझते हो या देह? अपन को आत्मा समझ कर बैठो। आत्मा ही पुनर्जन्म में आती है। अपन को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा बाप को याद करो। बाप को ही याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। उनको योगाग्नि कहा जाता है। निराकार बाप निराकार बच्चों को कहते हैं मुझे याद करनेसे तुम्हारे पाप कट जावेंगे। तुम पावन बन जावेंगे और मुक्ति-जीवनमुक्ति पावेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनो सभी को पानी है। मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति में आना है जरूर। तो घड़ी2 यह कहना पड़े अपन को आत्मा निश्चय कर बैठो। भाईयों और बहिनों अपन को आत्मा समझ कर बैठो और बाप को याद करो। यह फरमान बाप ने दिया है। यह है याद की यात्रा। बाप कहते हैं मेरे साथ बुधि का योग लगाओ तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। तुम पापात्मा से पावन आत्मा बन जावेंगे। यह तुम घड़ी2 याद करावेंगे समझावेंगे तब ही समझेंगे। आत्मा अविनाशी है देह विनाशी है। अविनाशी आत्मा ही विनाशी देह धारण कर पार्ट बजाये एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा का स्वधर्म तो शान्त है। वह अपने स्वधर्म को नहीं जानती है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो। मूल बात है यह। पहले2 तो तुम बच्चों को यह मेहनत करनी पड़े। वेहद का बाप आत्माओं को कहते हैं। इसमें कोई शास्त्र आद की मिशाल उठाने की भी उरूरत नहीं है। गीता का तुम मिशाल देते हो तो भी कहते हैं तुम सिर्फ गीता क्यों कहते हो। वेद का नाम क्यों नहीं लेते हो। बाबा ने कहा था उन से पूछो वेद किस धर्म का शास्त्र है? धर्म तो मुख्य है ही चार। फिर यह वेद किस धर्म का शास्त्र है? कबकोई ने बताया? (कहते हैं आर्य धर्म के हैं।) आर्य किसको कहते हैं। हिन्दु धर्म तो है नहीं। आदी सनातन तो है ही देवी-देवता धर्म। फिर आर्य कौन सा धर्म है? आर्य तो कोई धर्म ही नहीं। आर्य तो आर्यसमाजियों का धर्म हो गया। आर्यधर्म तो नाम ही नहीं है। किसने आर्य-धर्म स्थापन किया? तुमको वास्तव में गीता का भी नाम नहीं उठाना है। पहली बात अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो तुम सतोप्रधान बनेंगे। इस समय सभी हैं तमोप्रधान। पहले2 तो बाप ही का परिचय देना है। महिमा भी बाप की करनी है। वही शान्ति का सागर है। वह बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुमको शान्ति मिल जावेगी। बाप की महिमा करनी है। यहभी तुम तब कह सकोगे जब तुम खुद बाप को याद करते होंगे। इस बात में बच्चों की बहुत कमजोरी है। बाप हमेशा कहते हैं याद की यात्रा का चार्ट भेजो। कोई का भी चार्ट बाबा पास नहीं आता है। अन्यान्य बच्चों के लिए बाबा कहते हैं दिल से हरेक पूछे हम कहां तक याद करते हैं। दिल में अथाह खुशी रहनी चाहिए। तुमको अन्दरूनी खुशी होगी। तो दूसरों को भी समझाने का असर होगा। मैं भी तो देखूं अन्यान्य बच्चे मुझे कितना याद करते हैं।

बाबा के पास राजाओं के चित्र बना कर ले आये थे। अभी चित्र बनाना होता है प्रवृति मार्ग का। राजा रानी दो नो हो। एक का क्यों। यह तो निवृति मार्ग हो जाये। बाबा तो पास नहीं करेंगे ना। अपनी मत से बनाया है। कहेंगे सभी ने पास किया था। फलाने ने कहा यह बहुत अच्छा है। बाबा तो कहेंगे यह राय अच्छी नहीं। प्रवृति मार्ग के राजा रानी कहां? निवृति मार्ग तो है ही सन्यासियों का।

तो पहले2 मूल बात यह कहना है भाईयों और बहिनों अपन को आत्मा समझो। ऐसे और कोई सतयुग में नहीं कहेंगे। वास्तव में सतसंग तो कोई है नहीं। सत का संग तो एक ही है। बाकी सभी हैं कुसंग। आत्माओं को भूतों का संग करना पड़ता है। यहां है बिलकुल नई बात। वेद आद कुछ भी नहीं हैं। वेद से तो कोई धर्म स्थापन हुआ ही नहीं है तो हम वेदों को क्यों मानें। यह तो भक्ति मार्ग के अनेक वेद-शास्त्र बना ये हैं। पहले2 तो बाप का परिचय देना चाहिए। कोई में भी यह नालेज नहीं है। खुद ही कहते हैं नेती2

अर्थात हम नहीं जानते। तो नास्तिक हुये ना। अभी बाप स्वयं कहते हैं आस्तिक बनो। अपन को आत्मा समझो। यह बातें गीता में कुछ है। वेदों में नहीं हैं। तुमको ई वेदों को मानने वाले नहीं हो। वेद कोई धर्म शास्त्र नहीं। वेद उपनिषद आद ढेर हैं। अभी वह किस धर्म का शास्त्र है। कब कोई से पूछो? वह तो अपने ही टां2 करते रहो। तुमको तो कुछ सुनना न है। बाप तो सहज समझाते हैं। अपन को आत्मा समझो। बापको भी याद करो तो पावन बन जावेंगे। पावन बन पावन दुनिया के मालिक बन सकते हो। इसलिए इस वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी को जानना है। तुम्हारा यह त्रिमूर्ति और गोला है मुख्य। इन में सभी धर्मों का आ जाता है। पहले2 है देवी देवताओं का धर्म। बाबा ने मुरली में लिखा था त्रिमूर्ति गोला बहुत बड़ा बनाकर देहली के जो मुख्य स्थान हों, जहां आवत-जावत हो वहां लगाओ। टीन के सीट ही हो। सीढ़ी में तो और धर्मों का नहीं आता है। मुख्य है यह चित्र। समझानी बिलकुल क्लीयर है। समझाना ही इस पर है। पहले 2 तो बाप का परिचय। बाप से ही वर्षा मिलता है। पहली बात ही है एक। दूसरे चित्रों पर पर्दा डाल दो। पहले बाप का निश्चय करने बिगर तुम्हारा कुछ भी नहीं समझ सकते हैं। बाप को ही नहीं समझते तो और चित्रों परले जाना ही फालतू है। बाप के परिचय मिलने बिगर फालतू डिबेट करते रहेंगे। अल्फ को समझने बिगर कुछ भी नहीं समझेंगे। बाबा के परिचय बिगर और कुछ भी बात न करो। बाप से ही बेहद का वर्षा मिलता है। बाबा ख्याल करते हैं ऐसी सहज बात क्यों नहीं समझते हैं। तुम्हारी आत्मा का बाप शिव है। तुम सब ब्रदर्स हो। तो बेहद के बाप से जरूर वर्षा मिलना चाहिए ना। था, फिर तुम तमोप्रधान बने हो। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। पहले2 यह समझनी चाहिए। मूल बात ही यह है। रचयिता और रचना को जानना। कोई भी नहीं जानते हैं। ऋषि-मुनि भी नहीं जानते थे। गोया नास्तिक हो गया। तो पहले2 बाप का निश्चय बिठा कर आस्तिक बनाना है। बाप कहते हैं तुम मुझे जानने सैरेजकी सब समझ जावेंगे। मुझे न जाना है तो कुछ भी समझेंगे नहीं। मुफ्त में टाईम वेस्ट करते हो। चित्र भी ड्रामा अनुसार जो बने हैं वह ठीक है। परन्तु बाबा सोच में बैठते हैं। तुम इतनी मेहनत करते हो फिर भी कई के बुधि में नहीं बैठता। कहते हैं बाबा क्या हमारे समझाने में भूल है। बा क्या है। बाबा फट से कह देते हैं हां तुम्हारे समझाने में भूल है। अल्फ को ही नहीं समझा है तो फट से रवाना कर दो। बोलो जब तक बापको न जाना है तब तक तुम्हारी बुधि में कुछ बैठेगा नहीं। फिर हम क्यों टाईम वेस्ट करें। कहते हैं बाबा कितना भी समझाते हैं किसकी बुधि में बैठता ही नहीं है। अल्फ को न समझा है तो पूर भी नहीं बैठेगा। भक्ति मार्ग का ही भूसा बुधि में भरा हुआ है वह निकले कैसे। याद की यात्रासे ही निकलेगा। तुम भी जब तक इस अवस्था में नहीं बैठते हो तो आंखें क्रिमनल होती रहती है। सिविल तब बनेंगी जब अपन को आत्मा समझेंगे। देही-अभिमानी होंगे फिर आंखें तुमको धोखा नहीं देंगी। देही-अभिमानी नहीं हो तो माया धोखा देती है। इसलिए पहले2 तो आत्माभिमानी बनना है। बाप कहते हैं अपना चार्ट दिखाओ तो मालूम पड़े। भल झूठ पाप गप्पा लिखो। वैरी भी तुम्हारी ही डूबेंगी। अपनी सत्यानाश करेंगे। बाबा झट समझ जावेंगे इस ने सत्य लिखा है या अर्थ कुछ ही नहीं समझते। सभी बच्चों को बाबा कहते हैं चार्ट लिखो। नहीं लिखते हैं तो बाबासमझते हैं योग में नहीं रहते हैं इसलिए इतनी सर्विस नहीं होती। जौहर नहीं भरता है। भल बाबाकहते हैं कोटों में कोऊ ही निकलेंगे। परन्तु तुम खुद ही योग में नहीं रहते हो तो दूसरा फिर कैसे रहेगा। सभी अपने घर जाने चाहते हैं। सन्यासियों ने कहा है सुख काग विष्टा समान है। तो वह सुख का नाम ही नहीं लेते। भक्ति-मार्ग वालों से तुम ज्ञान मार्ग वालों की है लड़ाई। भक्ति तो अथाह है। बहुत चहचटा है। तुम्हारी नालेज तो बिलकुल शान्ति की है। चाहते भी सभी शान्ति ही हैं। बोलो शान्ति का सागर तो बाप ही है। अपन को आत्मा समझ बाप कोयाद करो तो शान्ति मिल जावेगी। सतयुग में भी शान्ति है ना। नई दुनिया में होता ही है शान्ति का राज्य। बहुत बच्चे हैं सच्च नहीं बतलाते हैं। चार्ट नहीं लिखते। नालेज तो बहुत सस्ती है। मैगजीन तो लिखनी

सहज है। बहुत लिखते हैं। पहले मुख्य बात है अपन को आत्मा शिव बाबा को याद करो। ऐसे शिव बाबा की पुजारी तो ढेर हैं। मूल बात है पहले अपन को आत्मा समझना। फिर बाप को याद करना है। बाप कहते हैं मन्मनाभव। यह अक्षर भी न कहो। हिन्दुस्तान की है ही हिन्दी भाषा। फिर संस्कृत दुसरी भाषा क्यों। ब्र गवर्मेन्ट क्यों संस्कृत पर जोर देती है। वह तो काम आने ही नहीं है। तो इन भाषाओं आद को छोड़ दो। पहले2 तुम भाषण करो तो बोलो अपन को आत्मा समझो। बहुत हैं जो अपन को आत्मा भी समझ नहीं सकते। याद कर नहीं सकते। अपने आदि को कोई समझ नहीं सकते हैं। कल्याण तो है ही बाप को याद में। और कोई सतसंग में ऐसे नहीं कहते कि अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। बच्चे कब बाप को एक जगह बैठ कर याद करते हैं क्या। उठते-बैठते तो बाप याद है ही। आत्माभिमानी बनने की प्रेक्टीस करनी है। तुम बहुत दूमच बोलते हो बात मत पूछो। इतना बोलना तुम्हारा होना नहीं चाहिए। मूल बात है बाप को याद करने की। इस योग अग्नि से से ही पावन बनेंगे। सभी दुःखी हैं। सुख मिलता ही है पावन बनने से। तुम खुद आत्म-अभिमानी हो किसको समझावेंगे तो किसको तीर भी लगेगा। कोई खुद विकारी है और दूसरों को कहे निर्विकारी बनो। उनको तीर लगेगा ही नहीं। क्यों कि खुद ही पतित है। यह भी ऐसे हैं। तुम खुद याद की यात्रा में रहते नहीं हो इसलिए किसको तीर लगता ही नहीं। अभी बाप कहते हैं बीती सो बीती। अब पहले तो अपन को सुधारो। दिल से पूछो हम अपन को आत्मा बाप को कितना याद करते हैं। जो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। हम शिव बाबा का बच्चा हूं तो जरूर हमको स्वर्ग का मालिक बनना चाहिए। बाप एक ही माशुक है। तुम सब हो आशुक। माशुक आकर खड़ा होता है तो उनके साथ बहुत लव हो ना चाहिए ना। लव माना याद। शादी होती है तो स्त्री का पति साथ कितना लव होता है। तुम्हारी भी सगाई हुई है ना। शादी नहीं। वह तो जब विष्णु पुरी में जावेंगे। पहले शिव बाबा पास जावेंगे फिर ससुर घर आवेंगे। सगाई की खुशी होती है ना। सगाई हुई और याद पक्की हुई। सतयुग में भी सगाई होती है। वहां सगाई कब टूटती नहीं। अकाले मृत्यु नहीं होती। यह तो यहां ही होता है। सगाई एक बार की फिर अगर नहीं होती। पवित्रपने में होना चाहिए ना। तो बाप समझाते हैं नालेज तो सहज है याद की यात्रा कहां है। बाप कहते हैं प्रेक्टीस करो। गृहस्थ व्यवहार में रहते याद करना है। मन नजदीक में रहते हैं तो भी उन्नति थोड़ी ही होती है। जो उस लव से आते हैं उनकी बहुत उन्नति होती है। याद ही नहीं करते हैं तो वह लव थोड़े ही रहता है। लव हो तो शिक्षा धारण करे। बाप का परिचय देवे। परिचय नहीं देते तो गोया लुल्हे-लंगड़े हैं। बाबा ने कहा था मंदिरों में जो शादियों के लिए हाल बनाते हैं उनको समझाओ। परन्तु कहां से भी समाचार नहीं आया है कि हम ने ऐसे समझाया। तुम वहां भी अच्छी रीत परिचय दे सकते हो। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। और यहां तुम लोग क्या करते हो। तुम उन से मिल कर समझा सकते हो। बोलो बाबा ने हमको यहां भेजा है। काम कटारी चलाने लिए जिन्हों ने हाल बनाया है उनको पैगाम दो। यह काम तो महाशत्रु है। जो आदि मध्य अन्त दुःख देते हैं। हम आप को बाप का पैगाम देने आये हैं। शिव बाबा ने हमको भेजा है। तुम तो पवित्र सतयुग के मालिक थे फिर गिरे हो तो गन्दे बन पड़े हो। अभी यह अन्तिम जन्म फिर से पवित्र बनो। काम चिक्षा पर बैठने का हथियाला तोड़ना है। हमको यह हाल दो तो हम सभी को यह शिक्षा देवें। सभी को काम चिक्षासे उतार ज्ञान-चिक्षा पर बिठावें। तुम ने तो यह कोस घर बैठ बनाया है। एक का भी समाचार नहीं आया है कि हम ऐसे गये थे समझाने लिए। बाप ने हमको भेजा है। धन बहुत है तो इस पाप के काम थोड़े ही लगाना चाहिए। यह धंधा छोड़ दो। कोस करने लिए दुकान निकाल बैठो हो। तुम भी योग में रह कर बोलेंगे तो किसको किसको तीर भी लगेगा। ज्ञान तलवार में जोहर चाहिए। वह है योग। पहले तो मुख्य है एक बात। कहते हैं हम तो बहुत मेहनत करते हैं। मुश्किल कोई निकलते हैं। बाप कहते हैं याद की यात्रा की यह मेहनतकरो। योग में रह समझाओ रावण से हरा कर विकारी बनते हो। अभी फिर निर्विकारी बनो। काम कटारी का धंधा छोड़ो

तो तुम्हारी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जावेंगी। बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बाबा गुह्य2 डायरेक्शन तो बहुत देते रहते हैं। परन्तु बच्चे पकड़ते नहीं हैं। और2 बातों में जाने की क्या दरकार है। मुख्य बात तो बाप बाप का पैगाम दो। खुद ही याद न करेंगे दूसरों को कहेंगे, यह ठगी तो चलेगी नहीं। यह तो जैसे गीदी ओर हो जाते हैं। दूसरों को कहना और खुद न करना। दूसरों को कहेंगे विकार में न जाओ और खुद जावेंगे तो उस दिल खावेगा ना। ऐसे गिदी और बहुत हैं। फिर दूसरों को तीर लगेगा नहीं। मूल बात को पकड़ना चाहिए। बाप कहते हैं अल्फ को जानने से तुम सभी कुछ जान जावेंगे। अलफ बिगर कुछ नहीं। एक पंडित को भी मिशाल सुनाते हैं ना। बोला राम राम कहने नदी पार हो जावेंगे। एक दिन पंडित को कहा चलो उस पार तो बोला बोट कहां है? कहने लगे अरे तुम ने कहा था राम राम कहनेसे नदी पार हो जावेंगे तो उन्हों ने निश्चय से विजय पा ली। वह था कुकर ज्ञानी। तुमको ऐसा नहीं बनना चाहिए। इसमें मेहनत है। इसमें ही फेल होते हैं। योग अग्नि निकाल दो। कहो याद। परमपिता परमात्मा की याद। परमपिता परमात्मा का अर्थ ही नहीं जानते। तो बाप बच्चों को बठ समझाते हैं तुम याद में नहीं रहते हो। इसलिए तुम्हारी सर्विस कम होती है। नहीं तो चार्ट क्यों नहीं लिखते। अहंकार रहता है ना। बाप इतनी बड़ी बर्थडे है परन्तु इतना लव थोड़े ही है। किसका थोड़ा अच्छा ज्ञान हो गया लिखा पढ़ी अच्छा की तो नशा चढ़ जाता है। यह है देह अभिमानी का नशा। बाप कहते हैं तुम पावन बनेंगे ही याद की यात्रा से। मूल बात में ही कमजोरी होगी तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। जब बाबा तो उस सब से जास्ती पुरुषार्थ करता होगा। तब तो इतना ऊंच पद पाते हैं। उनकी तो सर्टन है ना। स्कूल में मोनिटर जो होगा उनके लिए सभी कहेंगे। ना कि यह बहुत है। ऐसा होशियार है। यह तो सब से आगे हैं ना। परन्तु बहुत हैं जिनकी इन में आंखें ही नहीं डूबती है। कहते हैं हमको तो शिवबाबा से लेना है। यह तो खुद ही कहते हैं मैं तो जानता हूं ना बाबा है। निश्चय है। तुम ऐसे निश्चय रख नहीं सकते हो। नम्बरवन की ही बात है। यह जानते हैं हम शरीर छोड़ कर यह बनेंगे। इनका तो सबूत है ना। फिर भी मानिटर का मानते नहीं हैं। कहते हैं हम तो शिव बाबा से लेंगे। मोनिटर से हमारा क्या काम। और मोनिटर बिगर क्या सुनेंगे। फिर तो वहां बैठ ही शिव बाबा से लो। यहां क्यों आते हो। ब्रह्मा पास वा मधुबन में। कहते हैं ब्रह्मा की बात भी नहीं सुनते। ब्रह्मा को जैसे जानते ही नहीं। समझता है इनकी तकदीर में नहीं है। नहीं समझते हो तो जाकर घर बैठो। यहां क्यों आये हो। यह तो ब्रह्मा कुमार कुमारियों का घर है ना। इसमें बड़ी समझ चाहिए। और कोई भी बातों में जाने की दरकार ही नहीं है। पहले2 बाप का परिचय सिवाय शिव बाबा के चित्र और कोई चित्र दिखाओ ही नहीं। शिव बाबा के चित्र का अलग कमरा बना लो। दूसरा उरवाजा खोलो ही नहीं। जब पहले अल्फ को समझे लिखे कर दे। बाप का परिचय बिगर सुधरे गे ही नहीं। बन्दरों से तुम कितना माथा मारेंगे। और सभी बातों को छोड़ पहले2 अल्फ की बात। एक शिव बाबा का चित्र रखो। शिव बाबा की इतनी महिमा है। शिव बाबा प्यार से भी तो चाहिए ना। इतना प्यार किसको है नहीं। भल ब्रह्मा से है परन्तु शिव बाबा साथ बहुत कम है। बाबा डायरेक्शन देते हैं चार्ट भेजो। उन्नति के लिए कहते हैं देखें यह कितना याद करते हैं तो प्यार लिखेंगे। नालेज वाले वाले इतना नहीं लिखेंगे। याद की यात्रा वाले लिख भेजेंगे। देहद का प्यार इसको कहा जाता है बाबा को फीलिंग आती है शिव बाबा में लव बिलकुल ही नहीं है। स्त्री पुरुष का विकार के लिए लव कितना होता है। यह बाप निर्विकारी बनाते हैं तो इनको कितना प्यार से याद करना चाहिए। चार्ट दिखाओ। मूल बात ही यह है। इससे ही तुम पावन बनेंगे। अच्छा बच्चों को गडमोर्निंग और नमस्ते।

सूचना:-

******* अप्रैल मास की ज्ञानामृत दो या तीन अप्रैल के लगभग भेज दी जायेगी। कई कारणों से थोड़ी देर हो गई है।